Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryawani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Brief Report

Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

Name of the Project Undertaken	9 Upajatiyo Ke Adhar par 484 Raago Ki Utpatti and Taal	
Academic Session	2019-20	
Organizing Department/ Committee	Music	
Total Number of Students Participated in the Project	06	
Brief Report	The Project entitled Biographies and Contribution of 9 Upajatiyo Ke Adhar par 484 Raago Ki Utpatti and Taal, was undertaken by the Department of Music during the session of 2019-20 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total 6 students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work.	
Criterion :1	Metric no-1.3.3	
Signature of Co-Ordinator VAgarkar	Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator	Signature of & Stamp of Principal Principal Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur

	IQAC Coordinator Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya Jaripatka, Nagpur	

Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryawani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

Students Information

S.N.	Name of Student	Program	Class
1	Jyotsana Kadekar	B.A.	I Year
2	Riya Gomase	B.A.	I Year
3	Sana Ansari	B.A.	I Year
4	Kajal Lilhare	B.A.	I Year
5	Lakshmi Vishwakarma	B.A.	I Year
6	Kishori Bhagat	B.A.	I Year

Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya

Jaripatka Nagpur

Project On :

9 उपजातियों के आधार पर
484 रागों की उत्पत्ति
एवम्
तालों की जानकारी

Class - B A I Year

Session - 2019 - 20

Name :- Jyotsana Y. Kadekar

ARYA VIDYA SABHA'S

DAYANAND ARYA KANYA MAHAVIDYALAYA Jaripatka, Nagpur

'MUSIC PROJECT'

Organised By

Department of Music

CERTIFICATE

This is to certify that the project work in the subject Music entitled 9 Upjatiyo Ke Adhar Par 484 Raago Ki Utpatti and Talas has been successfully completed by Ku.Payal M. Kamble of B.A.I Year during the Academic session 2022-23. Hence the certificate is awarded to her.

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Co-Ordinator
Dr. Varsha Agarkar
Dept. Of Music
DAKM, Nagpur

Principal
Dr. S. Anilkumar
Principal, DAKM, Nagpur

विषय का चुनाव

भारतीय संगीत का इतिहास वर्षों पुराना है। देवी देवताओं के समय भी संगीत गान चलता था। ऋषी - मुनी अपनी योग साधना, भक्ति साधना संगीत के द्वारा किया करते थे। धीरे धीरे संगीत का प्रचार पृथ्वी पर भी बढ़ने लगा। और संगीत का प्रचार बढ़ाने मे महत्वपूर्ण भूमिका पंडीत विष्णु दिगंबर पलुस्कर व पं. विष्णु नारायण भातखंडे जी की रही। उन्होने संगीत को एक विषय के माध्यम से महाविद्यालय तक पहुँचायां। छात्राएँ भी संगीत का विधिवत ज्ञान लेने लगे। उसमे रागमें लगनेवाले स्वर, वर्जित स्वर अन्या होते है तथा उसके कारण जातियाँ कैसी बनती आदि का ज्ञान हो ~~४~~ इसलिये इस विषय का चुनाव किया।

═══ooo═══ooo═══

उद्देश्य

1) हम सभी छात्राओं को भारतीय संगीत का ज्ञान हो सके।

2) रागों का ज्ञान हो सके।

3) तालों का विधिवत ज्ञान हो सके।

नौ उपजातियों के आधार पर 484 रागों की उत्पत्ती

अथवा

एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ती किस प्रकार से होती है। विस्तार से लिखिए।

रागों में लगने वाले वर्जित स्वरों के आधार पर राग की जाति निश्चित होती हैं। इसके आधार पर राग की मुख्य जातियाँ तीन हैं।

(1) संपूर्ण - संपूर्ण
(2) षाडव - षाडव
(3) औडव - औडव

इन तीन मुख्य जातियों के आधार पर इसकी नौ उपजातियाँ होती हैं। हर जाति की तीन-तीन उपजातियाँ बनती हैं। वह इस प्रकार से हैं।

(1) संपूर्ण - संपूर्ण :- इस जाति के आरोह-अवरोह में एक भी स्वर वर्जित नहीं होता। सातों स्वरों का प्रयोग होता है।

(2) संपूर्ण - षाडव :- इस जाति के आरोह में एक भी स्वर वर्जित नहीं होता। सातों स्वरों का प्रयोग होता हैं। और अवरोह करने में एक स्वर वर्जित करते हुए, छः स्वरों का प्रयोग होता हैं।

(3) संपूर्ण - औडव :-

इस जाति के आरोह में एक भी स्वर वर्जित नहीं होता हैं। याने सातों स्वरों का प्रयोग होता हैं। और अवरोह में दो स्वर वर्जित होते हैं। पाँच स्वरों का प्रयोग करते हैं।

(4) षाड्व - षाड्व :-

इस जाति के आरोह - अवरोह में एक स्वर वर्जित करते हुए छः स्वरों का प्रयोग होता है

(5) षाड्व - संपूर्ण :-

इस जाति के आरोह में एक स्वर वर्जित करते हुए छः स्वरों का प्रयोग होता हैं। और अवरोह में एक भी स्वर वर्जित नहीं याने 7 स्वरों का प्रयोग होता हैं।

(6) षाड्व - औडव :-

इस जाति के आरोह में एक स्वर वर्जित करते हुए छः स्वरों का प्रयोग होता हैं। और अवरोह में दो स्वर वर्जीत होते हैं। याने पाँच स्वरों का प्रयोग होता हैं।

(7) औडव - संपूर्ण :-

इस जाति के आरोह में दो स्वर वर्जित करते हुए पाँच स्वरों का प्रयोग करते हैं। और अवरोह में एक भी स्वर वर्जित नहीं याने सभी सातों स्वरों का प्रयोग होता हैं।

(8) औडव - षाड्व :-

इस जाति के आरोह में दो स्वर वर्जित करते हुए पाँच स्वरों का प्रयोग होता हैं। और अवरोह में एक स्वर वर्जित होता हैं। याने

(3) संपूर्ण - औडव :-

इस जाति के आरोह में एक भी स्वर वर्जित नहीं होती याने सातों स्वरों का प्रयोग होता हैं। इसलिए केवल एक आरोह बनेगा और अवरोह में दो - दो स्वर की जोड़ी क्रमशः निध, निग, निरे धप, धम, धग, धरे, पम, पग, परे, मग, मरे, गरे, क्रमशः वर्जित करते हुए पंद्रह अवरोह तैयार होते हैं। आरोह - अवरोह को क्रमशः जोड़ने के बाद 1x15=15 राग तैयार होते हैं।

[4] षाड्व - संपूर्ण :-

इस जाति के आरोह में नि, ध, प, म, ग, रे, यह छः स्वर क्रमशः वर्जित करने के बाद छः आरोह मिलते हैं और अवरोह में एक भी स्वर ~~स्वर~~ वर्जित नहीं। सातों स्वरों का प्रयोग होता है। इसलिए केवल एक अवरोह मिलेगा आरोह - अवरोह को क्रमशः जोड़ने के बाद 6x1=6 राग तैयार होते हैं

[5] षाड्व - षाड्व :-

इस जाति के आरोह - अवरोह में एक - एक स्वर वर्जित करते हुए पाँच स्वरों का प्रयोग होता हैं। इसलिए आरोह भी छः और अवरोह भी छः तैयार होंगे। आरोह - अवरोह में क्रमशः जोड़ने के बाद 6x6 = 36 राग तैयार होते हैं।

[6] षाड्व - औडव :-

इस जाति के आरोह में नि, ध, प, म, ग, रे, सा छः स्वर क्रमशः वर्जित करने के बाद छः आरोह मिलते हैं। और अवरोह में दो - दो स्वर वर्जित करते हुए पंद्रह अवरोह मिलते हैं। आरोह - अवरोह से क्रमशः जोड़ने के बाद 6x15=90 राग तैयार होते हैं।

ताल - कहरवा

	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	न	ती	न	क	धि	न
	X				0			
	धा							
	X							
दुगुन:	धा	गे	न	ती	धागे	नती	तक	धिन
	X				0			
	धा							
	X							
चौगुन:	धा	गे	न	ती	न	क	धागेनती	नकधिन
	X				0			
	धा							
	X							

ताल - तिलवाड़ा

1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ता तिरकिट धिं धिं	धा धा धिं धिं
x	2	0	3
धा			
x			
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	धा तिरकिट धिंधिं तिंतिं	तातिरकिट धिंधिं धाधा धिंधिं
x	2	0	3
धा			
x			
धा तिरकिट धिं धिं	धा धा तिं तिं	ना तिरकिट धिं धिं	धातिरकिट धिंधिं धाधातिंतिं तातिरकिटधिंधीं धाधाधिंधिं
x	2		
धा			
x			

निष्कर्ष

विषय के बारे में ज्ञान होने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला गया की शास्त्रीय संगीत की महिमा अपरंपार है। शास्त्रीय जानकारी प्राचीन समय से जो किताबों द्वारा प्रकाशित की गई, उस कारण हम छात्राओं को ज्ञान मिला व संगीत सिखने मे सहायता मिली।